अभिमत

विश्व बंधुत्व

प्रधानमंत्री मोदी ने योग को परिभाषित करते हुए दुनिया भर के देशों को ज्ञान, विकास और समस्याओं के समाधान के लिए आपस में तारतम्य के माध्यम से जोड़ने का मंत्र भी दे डाला।

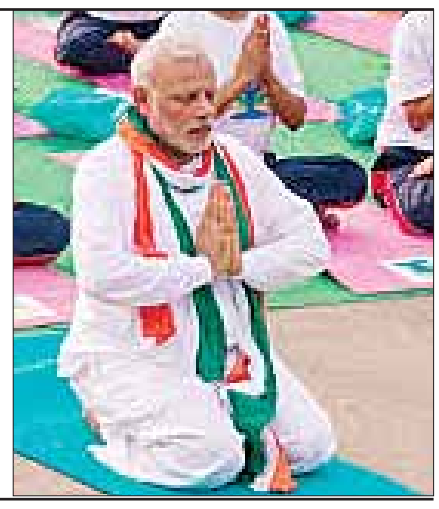

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाकपटुता का परिचय देते हुए आपस में लड़ रहे देशों को विश्व बंधुत्व की नसीहत भी दे दी। दरअसल 'योग' का शाब्दिक अर्थ जोड़ना होता है। गणित में संख्याओं को जोड़ने के लिए योग का प्रयोग किया जाता है। इस दृष्टिकोण से योग मात्र शारीरिक अभ्यास, कसरत और बलशाली बनने तक ही सीमित नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी ने योग को परिभाषित करते हुए दुनिया भर के देशों को ज्ञान, विकास और समस्याओं के समाधान के लिए आपस में तारतम्य के माध्यम से जोड़ने का मंत्र भी दे डाला। योगासन करते हुए शरीर के विभिन्न अंगों को जोड़ते हैं। यह बड़ा आसान और सरल तरीका जरूर लगता है। लेकिन दीर्घकाल में इसके गूढ़ और लाभदायक प्रभाव दिखते हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में जिम का फैशन लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। जबकि जिम में एक्सरसाइज करके लोग निरोग नहीं हो सकते। योग करने से निरोगी रह सकते हैं। रोगी हैं तो स्वस्थ हो सकते हैं। कई असाध्य रोगों का उपचार दवा से संभव नहीं है, जबकि योगासन से रोग दूर हो जाता है। इसी लिए भारत के प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र ने स्वीकार करते हुए वर्ष 2015 से 21 जून को पूरे विश्व में योग दिवस का आयोजन किया जाता है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में यह प्रस्ताव रखा था और पहली ही बार में प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया। अन्यथा प्रस्ताव एक बार में स्वीकार नहीं होता है। अब तो करीब-करीब दुनियाभर में सिर्फ योग दिवस को ही नहीं, प्रतिदिन लोग योग करते हैं। विभिन्न संस्थानों में मेडिकल क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक रोगियों पर दवा के साथ योग पर अनुसंधान भी कर रहे हैं। शोध में यह निष्कर्ष निकला कि मरीजों के एक समूह को दवा के साथ योग कराया गया और एक समूह को केवल दवा दी गई। योग करने वाले समूह के मरीज पहले रोग मुक्त हो गये। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भागमभाग की दिनचर्या में मनुष्य अपने शरीर पर ध्यान नहीं दे पाता है और रोगग्रस्त हो जाता है। दवा से रोगी पूरी तरह ठीक नहीं होता है। जबकि योग से रोग होता ही नहीं है। प्रदूषण के कारण भी अनेक रोग होते हैं। योग से मनुष्य के शरीर पर प्रदूषण का प्रभाव भी नहीं होता है। इसी तरह योग ने तन-मन दोनों स्वस्थ होते हैं। योग अब भारत का ब्रांड बन गया है। योग के जरिये विभिन्न देश एक-दूसरे से जुड़ें और विश्व शांति की दिशा में आगे बढ़ें। प्रधानमंत्री मोदी ने योग के माध्यम से ही दुनिया को आइना दिखा दिया। खास करके अपने पड़ोसी पाकिस्तान और चीन को बिना नाम लिए सुधरने के लिए आगाह किया है। एक तरफ विश्वभर के देश योग को अपना रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ भारत में ही समुदाय विशेष को सूर्य नमस्कार पर आपत्ति है। ऐसे मूढ़ बुद्धि वालों को समझाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। कुलमिलाकर योग तन-मन को स्वस्थ, शुद्ध और ऊर्जावान बनाता है।

विद्युत संकट

मुख्यमंत्री त्रिवेंद रावत अपनी चेतावनी को भूल गये। राज्य के भाबर और तराई में लोग भीषण गर्मी से त्रस्त हैं और बिजली कटौती और ज्यादा परेशान कर रही है।

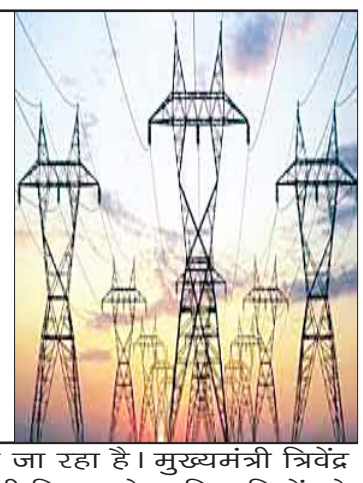

उत्तराखंड में विद्युत संकट लगातार गहराता जा रहा है। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत ने गर्मी का मौसम शुरू होते ही बिजली विभाग के अधिकारियों को चेतावनी दी थी कि विद्युत कटौती होगी तो उस क्षेत्र के अधिकारियों व कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। अप्रैल और मई में कई बार आंधी आई और बारिश व ओलावृष्टि हुई जिससे गर्मी का प्रभाव कम महसूस हुआ। लेकिन जून में भाबर और तराई में मानसून पूर्व की वर्षा नहीं हुई। मौसम वैज्ञानिकों ने पहले अनुमान व्यक्त किया था कि इस साल मानसून सामान्य रहेगा। 15 से 20 जून तक मानसून उत्तराखंड में पहुंच जायेगा। जून की शुरुआत में प्री-मानसून की बारिश शुरू हो जायेगी। लेकिन मौसम वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी गलत साबित हुई। अब कहा जा रहा है कि हवा की गति धीमी होने से मानसून छत्तीसगढ़ से आगे नहीं बढ़ पा रहा है। मानसून जून के आखिर अथवा जुलाई के शुरू में पहुंचेगा। प्रकृति पर किसी का नियंत्रण नहीं है। मानसून देर-सबेर सक्रिय हो ही जायेगा। परन्तु गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए लोगों को बिजली पर्याप्त मिलनी चाहिए। मुख्यमंत्री त्रिवेंद रावत अपनी चेतावनी को भूल गये। राज्य के भाबर और तराई में लोग भीषण गर्मी से त्रस्त हैं और बिजली कटौती और ज्यादा परेशान कर रही है। उधर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर देहरादून पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने मुख्यमंत्री रावत की तारीफ करके उन्हें जनसमस्या के प्रति आंखें मूंदे रखने को प्रोत्साहित कर दिया। वास्तविकता यह है कि राज्य के लोगों का जीवन पेयजल और विद्युत संकट से दुश्वार हो गया है। राज्य सरकार कोई प्रयास नहीं कर रही है। राज्य सरकार बारिश का इंतजार कर रही है। बारिश होने पर भूगर्भीय जल स्तर सुधर जायेगा। पेयजल मिलने लगेगा। लेकिन बारिश के बाद उमसभरी गर्मी पड़ेगी, उस समय भी बिजली की जरूरत होगी। इस लिए विद्युत संकट दूर करने का प्रयास तो करना ही होगा। प्रधानमंत्री द्वारा शाबाशी से काम नहीं चलेगा।

तितलियों के प्रति सकारात्मक सोच जरूरी

केरल के अंदरूनी, दूरदराज इलाकों तथा पूर्वोत्तर राज्यों के कई क्षेत्रों में एक समय तितलियों की करीब दो हजार प्रजातियां थीं और आज इनमें से लगभग कई सौ प्रजातियां साज-सज्जा के अंतर्राष्ट्रीय कारोबार में खत्म हो चुकी हैं जबकि भारत तथा थाईलैंड दोनों देशों में तितलियों का कारोबार अवैध घोषित है। अवैध शिकार के अलावा पौधों और वनस्पतियों पर कीटनाशकों के छिड़काव भी इन प्रजातियों के विलोप के खतरे के लिए जिम्मेदार हैं। एक सुंदर तितली का अंतर्राष्ट्रीय मूल्य 500 रुपये है।

अपने आसपास उड़ती रंग-बिरंगी तितलियों की प्रजाति के अचानक कम हो जाने पर क्या कभी आपकी नजर गई? हमारे आसपास के वातावरण में कई महत्वपूर्ण फसलों के बीज यहां से वहां पहुंचाने की जिम्मेदारी निभा रही इन तितलियों के लुप्त होने की चिंता किसी को नहीं सताती, तब भी नहीं जब हम किसी बधाई कार्ड पर, किसी किताब के कवर पर या साज-सजावट के किसी अन्य सामान पर सूखी तितलियां देखते हैं लेकिन स्थिति यह है कि दुनिया भर में हर रोज लाखों तितलियां अंतर्राष्ट्रीय बाजार में खरीद-फरोख्त के लिए सुखा कर मारी जा रही हैं। सौंदर्य सज्जा और कारोबार के नाम पर इनके पंखों की तस्करी ने 400 प्रजातियों को लुप्तप्रायः श्रेणी में ला खड़ा किया है। थाईलैंड इस कारोबार का केंद्र है। केरल के अंदरूनी, दूरदराज इलाकों तथा पूर्वोत्तर राज्यों के कई क्षेत्रों में एक समय तितलियों की करीब दो हजार प्रजातियां थीं और आज इनमें से लगभग कई सौ प्रजातियां साज-सज्जा के अंतर्राष्ट्रीय कारोबार में खत्म हो चुकी हैं जबकि भारत तथा थाईलैंड दोनों देशों में तितलियों का कारोबार अवैध घोषित है। अवैध शिकार के अलावा पौधों और वनस्पतियों पर कीटनाशकों के छिड़काव भी इन प्रजातियों के विलोप के खतरे के लिए जिम्मेदार हैं। एक सुंदर तितली का अंतर्राष्ट्रीय मूल्य 500 रुपये है। हिमाचल और जम्मू-कश्मीर की टाइगर हिल्स में पाई जाने वाली विशेष बर्डविंग बटरफ्लाई के एक जोड़े की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तकरीबन 25000 डॉलर से लेकर 35000 डॉलर तक होती है क्योंकि इसके पंख में मौजूद पीले रंग के कणों को कुछ देशों में सोने के गहनों पर सुनहरी पॉलिश करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी तरह लूजान पीकॉक स्वैलोटेल तितली, ओरिंथापटेरा हिलीयास, पैलीलियो हास्पीटान और अलैक्जैंडरी तितली का जोड़ा अंतर्राष्ट्रीय बजार में तस्कर हजार से दस हजार डॉलर की कीमत पर बेचते हैं। साधारणतया तितलियों को पकड़ने वाले तस्कर पेट्रोल जेनरेटर, अल्ट्रावॉयलेट बल्ब, बटरफ्लाई कलेक्शन जार, विभिन्न रसायन और जाल का इस्तेमाल करते हैं। पंजाब में बहुरंगी मोनार्क और लेमन बटरफ्लाई को बच्चों द्वारा 150 रुपये दिहाड़ी देकर पकड़वाया जाता है। इन मरी हुई तितलियों को हांगकांग, ताईवान, जापान, इंग्लैंड, कनाडा, और अमेरिका में ऊंची कीमत पर बेचा जाता है। तितलियों के तस्कर आमतौर पर अल्ट्रावॉयलेट लाइट और रसायन युक्त चोगे का इस्तेमाल तितलियों को आकर्षित करके पकड़ने के लिए करते हैं। ये बटरफ्लाई पोचर्स स्थानीय लोगों से सांठ-गांठ कर यह गैर कानूनी धंधा चलाते हैं। भारत में उत्तर-पूर्वी राज्य मिजोरम, नगालैंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम के अलावा पंजाब, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में तितलियों को पकड़कर विभिन्न राज्यों के साथ-साथ विदेशों में तस्करी करके भारी दामों पर बेचा जाता है। गहनों और सजावटी सामान के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए पकड़कर मारी गई तितलियों को फोटो फ्रेम में बंदकर दीवारों पर सजाने और कानों में गहनों की तरह पहनने के काम में लाया जाता है। तितलीयुक्त क्रिस्टल पेपरवेट, तितलियों के चाबियों के छल्ले और इयर रिंग्स आदि प्रति पीस पांच से दस हजार रुपये तक में बेचे जाते हैं। विश्व में तकरीबन तितलियों की 2400 प्रजातियां हैं जिनमें से तकरीबन 1500 प्रजातियां अकेले भारत में पायी जाती हैं। भारत में ही करीब सौ तितलियों की प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। एक ओर तितलियों का जीवनकाल बहुत छोटा होता है और दूसरी ओर तितलियों का लारवा प्रकृति के अनेक जीवों विशेषकर पक्षियों का भोजन होने के कारण आहार श्रृंखला का अहम हिस्सा है। लारवा के भोजन श्रृंखला का हिस्सा होने के कारण मात्र पांच फीसद तितलियां ही जीवित रह पाती हैं। ऐसे में तस्करी के कारण इनकी प्रजातियां तेजी से विलुप्त हो रही हैं। वाइल्ड लाइफ एक्ट 1972 के अंतर्गत संरक्षित होने के कारण तितलियों को पकड़ना, मारना और उनकी तस्करी करना दंडनीय अपराध है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1994 में दो जर्मन लोगों को 45000 तितलियों की खेप, वर्ष 1996 में दार्जीलिंग में एक जापानी पर्यटक को 1200, वर्ष 2001 में दो रूसी पर्यटकों को 2000, वर्ष 2008 में चेकोस्लोवाकिया के दो पर्यटकों को पश्चिम बंग में 1300 और वर्ष 2010 में रूस के एक बटरफ्लाई पोचर को तकरीबन 16 किलो विशिष्ट विलुप्त होने वाली तितलियों की खेप के साथ पकड़ा गया था लेकिन लगभग सभी मामलों में ढुलमुल नीति के कारण वे जमानत पर छूट गए। तस्करी के अलावा पर्यावरण प्रदूषण का असर भी तितलियों की प्रजातियों पर पड़ रहा है। तितली के खत्म होने की एक बड़ी वजह मोबाइल टेलीफोन टावर भी हैं। इनसे निकलने वाले रेडिएशन तितली की मौत का कारण बन रहे हैं। जिन फूलों और पत्तियों को खाकर तितलियां जीवित रहती थीं, उन वनस्पतियों में जहर शामिल हो गया है। तितलियों की खूबसूरत दुनिया का इस तरह छोटा होते जाना सिर्फ सौंदर्य के लिए ही नहीं, इंसान के अस्तित्व के लिए भी खतरे का संकेत है। कीट सिर्फ जैव विविधता का हिस्सा नहीं हैं बल्कि इनकी मेहनत और इनका बने रहना इंसान के वजूद के लिए भी बेहद जरूरी है। अपने भोजन की जुगत में ये जब एक फूल से दूसरे फूल तक दौड़ लगाती हैं तो परागण की क्रिया को अंजाम(पॉलीनेशन) देती हैं जो फल में बदलने के लिए जरूरी होती है। परागण की यह प्रक्रिया दुनिया को हर साल करीब 225 से 230 अरब डॉलर कीमत के प्राकृतिक उत्पाद तोहफे में देती हैं। ऐसा नहीं है कि इनके संरक्षण के लिए प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। पहले ठाणे का तितलीबाग काफी मशहूर हुआ करता था। इसी तर्ज पर मध्य प्रदेश के पन्ना, कर्नाटक के बंगलुरू के पास बन्नेरघट्टा और जमशेदपुर में टाटा स्टील जूलॉजिकल सोसायटी ने तितलियों के लिए पार्क बनाया है लेकिन तितलियों की विभिन्न प्रजातियों की तेजी से घटती संख्या के सामने यह प्रयास काफी नहीं है। पर्यावरणविद् मानते हैं कि इस दिशा में तेजी से प्रयास किए जाने की जरूरत है। मनुष्य मृत्यु के उपरांत तितली बन जाता है, ऐसा सोलोमन द्वीप वासियों का विश्वास है लेकिन दुनिया के बाकी देशों के लोग भी तितलियों के बारे में ऐसा ही कुछ सकारात्मक सोचें, तभी आगामी पीढ़ी तितलियों के रंगीन संसार का लुत्फ ले सकेगी। **-नरेंद्र देवांगन**

व्यंग्य

जनता का काम सिर्फ वोट देकर भूल जाना

यदि आपसे यह पूछा जाए कि जनता किसे कहते हैं? तो संभवतः आपको अच्छा नहीं लगेगा और जो कुछ आपको अच्छा नहीं लगेगा, वह मुझे अच्छा लगे, यह अच्छा नहीं होगा। अतः मैं इस सवाल को यहीं छोड़ता हूं और सीधे अपनी औकात पर आता हूं। जनता उन मनुष्यों को कहते हैं जिनके वोट से सरकारें बनती हैं। विधायक, मंत्री, सांसद, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बनते हैं। संक्षेप में ग्राम प्रधान से प्रधानमंत्री के निर्माण में जिनका वोट निर्णायक भूमिका अदा करता है उसे जनता कहा जाता है। कभी-कभी भूलवश मंचासीन लोग जनता को जनार्दन भी कह देते हैं। ऐसी गलतियां कई बार हो जाती हैं। बहरहाल, ऐसे मनुष्यों, जिन्हें हम अपनी सुविधानुसार जनता कहते हैं, का काम सिर्फ वोट देना होता है। इनकी यही नियति है। इस धराधाम पर इस जनता नाम के जीवधारी का आगमन सिर्फ वोट देने के लिए हुआ है। वोट देने के बाद जनता चुपचाप अपने कामकाज में लग जाती है। रोटी, कपड़ा, मकान, बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, दवा-दारू से उसे फुर्सत कहां? जनता के पास जो वोट मांगने जाते हैं वे किसी बाजीगर से कम नहीं होते। उनके पास क्या कुछ नहीं होता? जैसे आजकल की सफल पत्रिकाओं में क्या नहीं होता-मुरब्बा, अचार से लेकर नाखून पालिश, होंठ पालिश से राजनीति, समाज, साहित्य, फिल्म, पर्यटन, सेक्स, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र से लेकर वास्तु और सामुद्रिक तक यानी भानुमती का पिटारा। बेचारा ग्राहक कहीं न कहीं तो फंसेगा ही। उसी प्रकार सफल मत याचक के पास भी सभी कुछ होता है- जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र, विकास ही नहीं, समग्र विकास के अनेक सतरंगी सपने। इतना ही नहीं, विरोधियों के विरुद्ध इस्तेमाल होने वाली वह हर सामग्री जिनके मूल में 'दाह' और 'आह' हो। इन सभी शस्त्रों से लैस 'मतयाचक' जनता के पास जाता है। अब जनता बेचारी क्या करे। उसे तो कहीं न कहीं फंसना ही है- 'हम किनारे नहीं थे, किनारे ही थे, ढहना ही था हमें और ढहते रहे।' निर्वाचित प्रतिनिधि और जनता के बीच संवाद विवाद की, दोनों ही स्थितियां प्रायः कम ही आती हैं। एक से प्रतिनिधित्व बचता है और दूसरी से यथासंभव जनता। संवाद या विवाद इसलिए भी सम्पन्न नहीं हो पाते कि प्रतिनिधि महोदय क्षेत्र में और जनता महोदय राजधानी में जाने का शुभ संयोग कम ही जुटा पाते हैं। राजधानी में बहुत काम होते हैं और अनेक जिम्मेदारियां रहती हैं। सरकारों को गिराने और बनाने का, क्रिकेट से भी अधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय गेम प्रायः वर्ष भर चला करता है। इन सबसे अलग राजधानी में ऐसा बहुत कुछ होता है जो क्षेत्र में प्रयत्न करके भी नहीं जुटाया जा सकता। इन सारे आकर्षण से मुक्त होना यदि संभव नहीं तो आसान भी नहीं है। इसमें प्रतिनिधि का कोई दोष नहीं होता। लोग व्यर्थ का दोषारोपण कर देते हैं। मैं इससे सहमत नहीं हूं। अरे जिन्दगी जीने का सबका अपना तरीका होता है। जीवन में कुछ ही वर्ष तो सौभाग्यशाली मिलते हैं। अब उसे भी पानी-कीचड़ में लपेटना कहां की बुद्धिमानी है? दुनिया तो आनी-जानी है। इस सबके बावजूद प्रतिनिधि या मंत्री महोदय वर्षा में एक या दो बार क्षेत्र में पधारने का शुभ मुहूर्त निकाल ही लेते हैं जिनकी प्रथम सूचना मीडिया को, दूसरी सूचना अधिकारियों को और अन्तिम सूचना क्षेत्र में पूज्य चमचों को दी जाती है। इस सारी प्रक्रिया में जनता कहीं नहीं होती। पूज्य चमचे तय करते हैं कि मंत्री जी कहां से किस पुल का उद्घाटन अथवा विद्यालय का शिलान्यास करेंगे? और कहां जनता नामधारी मनुष्य जुटाये जायेंगे जिनसे मंत्री जी मुखातिब होंगे। कहां थ्री एम अर्थात मंच, माइक, माला की व्यवस्था करनी होगी? कहां जलपान, भोजन और विश्राम? ये सारे दायित्व पूज्य चमचों के होते हैं जिन्हें वे बखूबी निभाते हैं। सब कुछ ऐसे ही चलता रहता है। मौसम बदलते रहते हैं। गंगा पीलियाग्रस्त ही सही लेकिन बहती रहती है। चुनाव आते रहते हैं और जाते रहते हैं। वोट देने वाले वोट देते रहते हैं। सरकारें बनती रहती हैं और बिगड़ती रहती हैं। नेता, अधिकारी, मीडिया और जनता सभी की अपनी-अपनी चाल होती है, अपनी चाल से पूरा समाज और देश चलता रहता है। अंत में मैं अपनी जनता का धन्यवाद करना नहीं भूल सकता जिसे धरा सा धैर्य, वृक्ष और नदी सा त्याग, माता की करुणा, गर्दभ सी सहनशक्ति, श्वान सा संतोष और कामी सी आसक्ति सहज ही प्राप्त है। ऐसी जनता प्रणम्य है, वंदनीय है। **-कौशिक रवीन्द्र उपाध्याय**

बोल वचन

हम मित्र विपक्ष नहीं, सड़क से सदन तक सरकार की नीतियों का विरोध किया है।
-प्रीतम सिंह, उत्तराखंड कांग्रेस अध्यक्ष।

काम की बात

अगर किसी सुयोग्य लड़की की शादी में परेशानियां आ रही हैं तो संभव है कि उसकी कुंडली में कोई ग्रह दोष हो। ज्योतिष की मान्यता है कि अगर कुंडली में अशुभ योग होते हैं तो लड़की का विवाह आसानी से नहीं हो पाता है। बेटी भले ही कितनी भी गुणवान हो, लेकिन फिर भी शादी के योग नहीं बन पाते हैं। जब भी लड़के वाले लड़की को देखने आए तो माता-पिता और बेटी को नये कपड़े पहनना चाहिए। लड़की के कपड़े पीले होंगे तो ज्यादा शुभ रहेगा। अगर शादी में अनावश्यक रूप से देरी हो रही है या विवाह के लिए कोई प्रस्ताव नहीं मिल रहा है तो लड़की को हर गुरुवार पीले और शुक्रवार को सफेद वस्त्र धारण करना चाहिए। जिस समय बेटी के रिश्ते की बात हो रही हो, उस समय कमरे में जूते-चप्पल नहीं रखना चाहिए। जूते-चप्पल घर के बाहर बाईं ओर व्यवस्थित ढंग से रखना चाहिए। जिस दिन लड़की के रिश्ते की बात होनी है, उस दिन लड़की को बाल खुले रखना चाहिए। लड़के वाले से बात करते समय चोटी नहीं बांधनी चाहिए। अगर लड़की के माता-पिता रिश्ते की बात करने के लिए किसी लड़के के यहां जाते हैं तो उस समय घर में प्रवेश करते समय सीधा पैर अंदर रखना चाहिए। लड़की जब भी किसी रिश्तेदार की शादी में जाए तो उसे दूल्हा या दुल्हन की मेहंदी में से थोड़ी सी मेहंदी लेकर अपने हाथ में भी लगानी चाहिए। शीघ्र विवाह की कामना से लड़की को 16 सोमवार का व्रत करना चाहिए।

रजत पट

बैकलेस ड्रेस में 'इश्कबाज' की एक्ट्रेस रेहाना मल्होत्रा का फोटोशूट

'इश्कबाज' फेम एक्ट्रेस रेहाना मल्होत्रा यानि श्वेतलाना अपने लेटेस्ट फोटोशूट की वजह से चर्चा में हैं। अपनी ये स्टनिंग फोटोज एक्ट्रेस ने इंस्टा अकाउंट पर शेयर की हैं। तस्वीरों में रेहाना का बोल्ड और ग्लैमरस अंदाज देखने को मिल रहा है। रेहाना बैकलेस ड्रेस में नजर आ रही हैं। रेड लिपस्टिक के साथ उनकी ब्लैक बैकलेस ड्रेस कहर ढा रही है। एक्ट्रेस की तस्वीरें सोशल मीडिया पर फैंस के बीच वायरल हो रही हैं। उनकी इस फोटो की फैंस तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। फोटो शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने कैप्शन लिखा- मैजिक। ये स्ट्रगल शॉट था क्योंकि हम लेट थे और ये लुक हमने 10 मिनट में लिया। रेहाना सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। इश्कबाज में विलेन के रोल से उन्हें काफी पॉपुलैरिटी मिली। रेहाना को लेकर खबर है कि वह एकता कपूर के अपकमिंग शो 'कसौटी जिंदगी की- रीबूट' में कोमोलिका के रोल के लिए कास्ट की गई हैं। पहली सीरीज में इस रोल को उर्वशी ढोलकिया ने किया था। रेहाना ने अपने करियर की शुरुआत स्टार प्लस के शो गुलमोहर ग्रैंड से की थी। इसके बाद वह जमाई राजा, इस प्यार को क्या नाम दूं-3, वह अपना सा, दिल बोले ओबेरॉय में नजर आ चुकी हैं।

मुझे कुछ कहना है

जनशोषक नीतियां नहीं बदलीं

महोदय,

कांग्रेस भले ही भाजपा सरकार पर यह तोहमत मढ़े कि बढ़ती बेरोजगारी, महिलाओं पर अत्याचार और किसानों के मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुप हैं। यह भी कहे कि बीते चार साल में देश को बेरोजगारी और नफरत के सिवाय उन्होंने कुछ नहीं दिया तो यह बात भी समझ में आती है लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी का यह कहना कि इन सबसे देश की जनता नाराज है, यह बात किसी के गले नहीं उतरती क्योंकि हर व्यक्ति इस कड़वी सच्चाई से वाकिफ है कि देश की जनता न तो पहले खुश थी और न ही आज नाराज है क्योंकि वह अब इसे अपनी राजनीतिक नियति मान चुकी है। उसे पता है कि वह हर पांच-दस साल में सिर्फ सियासी मुखौटे बदलने को अभिशप्त है लेकिन जनशोषक, जनउत्पीड़क नीतियां तो यथावत ही रहने वाली हैं, क्योंकि इसकी चाबी कहीं और है। शायद नौकरशाही और उद्योगपतियों के स्वार्थपरक गठजोड़ समेत राजनेता भी असहाय हैं सत्ता की अस्थाई प्रकृति के मद्देनजर। यदाकदा इस पीड़ा को बहुतेरे नेता छिपाते भी नहीं हैं। **-सुधांशु वशिष्ठ, हल्द्वानी।**